International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 5, Issue 10, October 2018
Website- www.aarf.asia, **Email** :editoraarf@gmail.com

अशोक वाजपेयी का रचना-संसार

निहारिका संह
शोध छात्रा, हिन्दीP वभाग
इलाहाबाद वश्वज वद्यालय प्रयागराज

अशोक वाजपेयी समकालीन हिन्दी-क वता के प्रमुख क वयों में से एक हैं, अशोक वाजपेयी बहुलतावादी काव्य-प्रवृत्ति के पक्षधर क व हैं, वे क वता में जीवन-संघर्ष, निजी-संबंधों, प्रेम, मृत्यु, पड़ोस, पूर्वज, संसार सभी की बात करते हैं। अशोक वाजपेयी की क वताओं में हम मानवीय-संवेदना और सौहार्द की ऊष्मा को महसूस कर सकते हैं। अशोक वाजपेयी को हम मानवीय-काव्यधारा की परम्परा से जोड़कर देख सकते हैं, वे प्रसाद, निराला, पंत, अज्ञेय की काव्यधारा के चरण में क व हैं। अशोक वाजपेयी की काव्य-प्रकृति को दृष्टिगत करते हुए 'ओम निश्चल' लखते हैं, "वे उस धारा के क व हैं जो प्रसाद और कुंवरनारायण से होती हुई उन्हें एक ऐसे क व के रूप में नि र्मत करती हैं जिनमें भारतीयता की एक मुकम्मल पहचान छि पी हैं। उन्होंने क वता और कलाओं के सान्निध्य में पूरा जीवन बिताया है। क वता में उनकी अपनी आवाज है। एक सार्थक आवाज। उनके भीतर पुरखों के प्रति, देवताओं के प्रति अपार कृतज्ञता हैं। साहित्य की स्था पत परंपराओं को नि र्मत करने वाले और उन्हें अपनी मा र्मकता से सींचने वाले मूर्धन्य साहित्यकारों के प्रति कृतज्ञता रही हैं। यही हमारा भारतीयता हैं।[1]"

[1]शब्दों से गपशप ओम निश्चल, पृ. 93

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

अशोक वाजपेयी ने जिस दौर में क वता लखना प्रारम्भ कया था, हिन्दी साहित्य में क वता का वह समय वचारधारापरक व प्रवृत्तिपरक काव्य का था, राजनीतिक वचारधारा की क वता केन्द्र में थी, जब क अशोक-वाजपेयी का दृष्टिकोण वचारधारा प्रेरित क वता के पक्ष में नहीं है, उन्होंने हमेशा ही क वता को एक मानवीय घटना माना हैं। अशोक वाजपेयी ने हमेशा ही मानवीय संवेदना प्रेम, जीवन-मृत्यु आदि को क वता का केन्द्र-बिन्दु माना है।

अशोक वाजपेयी ने प्रेम-सम्बन्धी क वता अ धक लखी हैं, उनका प्रेम व वध स्वरूपों में क वता के माध्यम से प्रद र्शत हुआ हैं, कभी वे निजी-सम्बन्धों जैसे- माँ, पता और पोते के लये क वता लखते हैं, तो कभी प्रे म के लये दैहिक और उदार दोनों से स्वरूपों में अपने प्रेम का इज़हार करते हैं।

अशोक वाजपेयी की प्रेम क वताओं पर इल्जाम लगाते हुए कुछ क व उन्हें 'देह और गेह' का क व कहकर सम्बो धत करते हैं, ऐसा इस लये है, क्यों क अशोक वाजपेयी ने प्रेम के दैहिक और कायिक सौन्दर्य को अपनी क वता में स्थान दिया है। अशोक वाजपेयी के प्रेम के दैहिक सौन्दर्य पर प्रकाश लखते हैं, "प्रेम में देह' के प्रत्यय में प्रेम मुक्त होता है। वह खुद के अलावा देह को भी मुक्त करता है। वह देह का उल्लंघन कर सार्वभौम स्पेस में वक सत होता हैं।..... देह में प्रेम में भी। वहीं प्रेम में देह में डूबने वाले देह में भी घुलते हैं और प्रेम भी उनसे अछूता नहीं रहता। वे अनहुई प वत्रता पर भरोसा नहीं करतें।"[2]

इस तरह अशोक वाजपेयी ने जहाँ एक तरफ प्रेम के उदाप्त स्वरूप को स्वीकारा है, वहीं दूसरी तरफ प्रेम के दैहिक और कायिक स्वरूप को भी अपनी क वता में स्थान दिया है। अशोक वाजपेयी के प्रेम को दैहिक और कायिक स्वरूप को समझने के लये हमें क वता के अ भ धात्मक स्वरूप को छोड़ कर क वता में व्यंजनाओं में घटित अल क्षत अर्थध्वनियों को समझने का प्रयास करना चाहिए। प्रत्येक क व के क वता लखने के रचनात्मक तरीके होते हैं, जैसे अज्ञेय की रचनात्मक और प्रेम का स्वरूप अलग है, शमशेर बहादुर संह का अलग है, केदारनाथ अग्रवाल अलग तरीके से प्रेम को परिभा षत करते हैं, वैसे ही अशोक वाजपेयी की भी प्रेम क वता की अपनी अलग रचनात्मकता है।

---

[2]क वता का अशोक पर्व प्रकाश, पृ. 207

अशोक प्रेम क वताओं पर ओम निश्चल लखते हैं- "प्रेम क वता वही लख सकता है, जिसके मन में संसार के प्रति अनुराग हो। यह संसार के अनुराग से ही उपजती है। बिना सांसारिक हुए आप क वता नहीं लख सकते। प्रेम का अनुभव नहीं कर सकते। तब जिसे संसार से अनुराग न हो क वता न लखे, कोई और काम करे।"[3]

अशोक वाजपेयी ने पड़ोस, पूर्वज और अपने निजी-सम्बन्धों पर भी क वता लखी है, जिस पर कई बार उन पर यह आरोप लगता है क उनकी क वताओं में सामाजिकता का अभाव है, अशोक वाजपेयी नितान्त सामाजिक क वता को 'अ भधाआक्रांत' क वता कह कर खारिज करते हैं, वे व्यक्तित्वहीन क वता के वरोधी है, उनका मानना है क क वता हमेशा एक मानवीय घटना होती है, इस सन्दर्भ में उन्होंने अपनी आत्मकथा में लखा भी है, "मैं सचमुच समाज को जानने का कोई दावा नहीं करता।..... मैं तो बचपन से अपने पड़ोस को जानता आया हूँ और समाज के बजाय पड़ोस का क व हूँ। एक ऐसे समय में जब सभी लोग समाज और समय पर, सामाजिक संघर्षों और सम्बन्धों पर क वता लखतें हों, पड़ोस और समयातीत पर, अपने शब्द संघर्ष और निजी सम्बन्धों की क वता लखना चालू प्रवृत्ति पर टिप्पणी है और राजमार्ग और जनपथ में अलग अपनी पगडंडी की तलाश करना भी है। यह एक तरह का अघो षत प्रतिपक्ष बन जाता है।"[4]

अशोक वाजपेयी ने मृत्यु पर भी क वताएँ लखी हैं, अशोक वाजपेयी ने अपने काव्य-संसार में दो प्रमुख वषयों को चुना है, जिसमें पहला प्रेम है और दूसरा मृत्यु। वे एक साथ प्रेम और मृत्यु दोनों के क व हैं। अशोक वाजपेयी ने अपनी क वताओं में जीवन की तरह ही मृत्यु को भी स्वीकारा है, कहीं पर उनकी मृत्यु-सम्बन्धी क वताएँ रहस्य पैदा करती हैं, तो कहीं पर कौतूहल पैदा करती है। अशोक वाजपेयी के क व-मन को यह ज्ञात है क मृत्यु अनिवार्य है, और वह इस नश्वरता का उत्सव मनाते हैं। वे अपने पहले काव्य-संग्रह से ही मृत्यु से उलझते रहे हैं। यह जानना आवश्यक है क अशोक वाजपेयी की मृत्यु सम्बन्धी क वताओं को लखने के पीछे का कारण क्या है? वे अपने आत्मवृत्त में इसका कारण बताते हुए लखते हैः "मेरी क वता अवसाद के रेशे से बुनी गई है..... एक लगभग अकारण अवसाद की छाया में जीवनभर क वता

[3]शब्दों से गपशप, ओम निश्चल, पृ. 114

[4]पाव भर जीरे में ब्रह्मभोज : अशोक वाजपेयी, पृ. 80

लखना व चत्र भले है, है सच। कुछ इस हद तक क कभी-कभी यहाँ तक लगता है क क वता शब्दों से नहीं, बुनियादी तौर पर इस अवसाद से लखता हूँ।"[5]

अशोक वाजपेयी ने प्रेम, जीवन, मृत्यु के अलावा कुछ क वताएं सामाजिक समस्याओँ, साम्प्रदायिकता, राजनीति पर भी लखी हैं, यहाँ पर क व की क वताएँ व्यक्ति-सापेक्ष न होकर समाज-सापेक्ष हैं।" कुछ रफू कुछ थगड़े और 'समय के पास' समय' क वता उनकी सामाजिक व्यक्तित्व की झांकी प्रस्तुत करती है। 'कुछ रफू कुछ थगड़े' क वता में वे गोधरा-कांड जैसी घटना का वरोध करते हैं, वही 'इबादत से गरी मात्राएँ ' काव्य संग्रह में वे भ वष्य की नयी उम्मीद करते हुए दिखाई देते है।

स्पष्ट है क अशोक वाजपेयी का रचना-संसार अनेक अमूल्य़ क वताओं की झांकी है, जहाँ व वधतावाद है, क वता की अपनी स्वायत्तता है, रागात्मकता है, प्रेम, जीवन-मृत्यु, पड़ोस, पूर्वज सभी उनकी क वताओँ में स्थान पाते हैं।

[5]पावभर जीरे में ब्रह्मभोज : अशोक वाजपेयी, पृ. 17